हिन्दी दलित उपन्यासों में प्रतिरोधी मूल्यचेतना का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा की पी–एच. डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

2015

शोध निर्देशिका :–

डॉ. नमस्या
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,कला संकाय,
डी.ई. आई. दयालबाग़ आगरा

शोधार्थिनी :–

अनुराधा सिंह
एम. ए., एम. फिल.(हिन्दी)

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा – 282005

हिन्दी दलित उपन्यासों में प्रतिरोधी मूल्यचेतना का अध्ययन

विषय प्रवेश

वर्तमान समय में हिन्दी का दलित साहित्य हिन्दी साहित्य से अलग अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुका है, इतना ही नहीं उसने हिन्दी के परम्परागत सौन्दर्यशास्त्र को नकारते हुए अपना पृथक् सौन्दर्यशास्त्र भी निर्मित किया है दलित साहित्य का अपना चिन्तन–दर्शन और विचारधारा है, उसकी अपनी प्रतिबद्धता है जो निश्चित ही कई अर्थों में हिन्दी साहित्य से भिन्न है। दलित साहित्य को विगत दो–ढाई दशकों में मिली लोकप्रियता और काफी जद्दोजहद के बाद मिली सामाजिक मान्यता का ही यह प्रभाव है कि साहित्य और सामाजिक ज्ञान के क्षेत्र में दलित विमर्श लगभग अनिवार्य–सा हो गया है।

साहित्य के क्षेत्र के अर्न्तगत एक और साहित्य अपनी अस्मिता के लिये संघर्ष कर रहा है। यह साहित्य समाज के ऐसे वर्ग का साहित्य हैं जिसमें उसके जीवन की पूर्ण वास्तविकता चित्रण हुआ है। यह साहित्य दलित साहित्य के नाम से साहित्य में अपनी पहचान रखता है। दलितों ने अपने साहित्य के माध्यम से अपने जीवन के यथार्थ को पटल पर रखा है। समाज द्वारा दी गई वेदना, पीड़ा, उपेक्षा आदि विभिन्न समस्याओं को इस वर्ग ने अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। यह साहित्य उस वर्ग का साहित्य है जो आज के आधुनिक समय में परम्परा और धर्म के आधार पर बनायी गई वर्ग भेद की दीवार को ढ़ाहने में पूर्ण सक्षम है। इनके साहित्य के अन्तर्गत जातिभेद, वर्गभेद, छुआछूत, उपेक्षा की भावना का पूर्ण प्रतिकार किया गया है साथ ही समाज में समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना का चित्रण है। यह साहित्य समानता का साहित्य है, स्वतंत्रता का साहित्य है, बराबरी का साहित्य है और साथ ही अपनी अस्मिता के लिये लिखा जाने वाला साहित्य है।

दलित साहित्य पर एक नज़र डालने से पहले 'दलित' शब्द का अर्थ, दलित शब्द की अवधारणा, प्रेरणास्रोत, चिंतन के आधार को जानना–समझना प्रासंगिक होगा।

'दलित' शब्द का अर्थ

'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ है–'कुचला हुआ''गरीब' और 'शोषित वर्ग'। महाराष्ट्र में सन् 1970 के दशक में 'दलित' शब्द का सबसे अधिक प्रचार हुआ। 'दलित पैंथर्स' ने दलितों में अनुसूचित जातिजनजाति, नव बौद्ध, मजदूर, भूमिहीन एवं गरीब किसान उच्च वर्ण/वर्ग से आर्थिक एवं धार्मिक रूप से पीड़ित एवं शोषित सदस्यों को सम्मिलित किया। 'दलित' शब्द की इस व्यापक अवधारणा को डॉ. शरणकुमार लिम्बाले ने 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र में स्वीकार किया है किन्तु हिन्दी के दलित साहित्य और दलित आलोचनात्मक लेखों

पर यदि नज़र डालें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि दलित साहित्य में 'दलित' शब्द से आशय अस्पृश्य जातियों से है। दलित साहित्य के केन्द्र भी अस्पृश्य जाति ही हैं।

दलित साहित्य की अवधारणा

कँवल भारती के शब्दों में– ''दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है। अपने जीवन संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उसी की अभिव्यक्ति करता है,........यह कला के लिए कला का नहीं बल्कि जीवन की जिजीविषा का साहित्य है।''

डॉ. शरणकुमार लिम्बाले के अनुसार– ''दलितों का दुःख, परेशानी, गुलामी, अधःपतन और उपहासके साथ ही दरिद्रता का कलात्मक शैली से चित्रण करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है, ''स्पष्ट है कि दलित साहित्य के केन्द्र में दलित और उसके द्वारा भोगा हुआ अस्पृश्यता का दंश, भूख, गरीबी, शोषण, सामाजिक विषमता की पीड़ा–वेदना और इन सबको लेकर समाज के सवर्णों के प्रति अत्यन्त तीखी घृणा तथा विद्रोह का भाव है।''

दलित साहित्य की प्रतिरोधी मूल्य चेतना समाज से सहानुभूति की माँग नहीं करती वरन् सामाजिक न्याय के अधिकार की माँग करती है, उसमें बराबरी के स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तरों पर समाज की भागीदारी का आग्रह अधिक है।

दलित साहित्य ने अपनी ऊर्जा और चेतना डॉ. अम्बेडकर के दर्शन से प्राप्त की है। आज डॉ. अम्बेडकर के विचार और चिन्तन की व्यापकता ही दलित साहित्य की मुख्य धारा है। कँवल भारती के शब्दों में–''डॉ. अम्बेडकर की दलित मुक्ति की चेतना और विचारधारा से जुड़ने के बाद न सिर्फ दलित साहित्य का नया अर्थ मिला, अपितु सामाजिक परिवर्तन की सम्पूर्ण विद्रोही चेतना ही उसकी अवधारणा बन गई।.......आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह अम्बेडकरवादी है, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उसके सरोकार वही हैं जो डॉ. अम्बेडकर के थे।''

डॉ. अम्बेडकर ने धर्म को ईश्वर और कर्मकाण्डों पर आधारित होने का विरोध इसलिए किया था कि ये दोनों ही व्यवस्थाएँ सवर्णों की देन हैं, जो दलितों का सामाजिक शोषण करती हैं। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने अनीश्वरवादी, अनात्मवादी और वैज्ञानिक दृष्टि से धर्म का समर्थन किया। ब्राह्मणवाद, सामंतवाद और पूंजीवाद सहित डॉ. अम्बेडकर वर्णव्यवस्था के कट्टर विरोधी थे।

सवर्णों का श्रेष्ठत्व, सामाजिक जीवन में बेमेल आचार–विचार, स्त्री और शूद्रों की प्रतिष्ठा का अवमूल्यन, पवित्रता और अपवित्रता की भ्रामक कल्पनाएँ आदि सामाजिक व्यवस्थाओं को डॉ. अम्बेडकर ने सदैव नकारने का संघर्ष किया। वे मनुष्य और मानवतावाद को सर्वोच्च मानते थे। अतः जो संस्कृति या सामाजिक व्यवस्था

मनुष्य को उसके आत्मसम्मान से अपदस्थ करें, उसके प्रति डॉ. अम्बेडकर ने विद्रोह किया, अन्याय, शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध डॉ. अम्बेडकर की विद्रोह चेतना ही दलित साहित्य की मुख्य शक्ति है।

अतः डॉ. अम्बेडकर के विचारों और दर्शन को समझे बिना दलित साहित्य की मुख्य चेतना को समझना कठिन नहींतो आधा–अधूरा अवश्य कहा जाएगा।

हिन्दी साहित्य में दलित जीवन को केन्द्र में रखकर अनेक रचनाएँ सामने आई हैं– प्रेमचन्द, निराला, अमतृलालनागर, गिरिराज किशोर जैसे कथाकारों ने दलित प्रसंगों को लेकर अनेक कहानियाँ, उपन्यास लिखे गए हैं, इसलिए हिन्दी साहित्य के लिए दलित विमर्श नया नहीं हैं किन्तुविगत दो दशकों में दलित विमर्श इतना महत्त्वपूर्ण हो गया कि उसने एक स्वतंत्र धारा के रूप में अपनी पृथक् पहचान स्थापित कर ली है। दलित साहित्य की आवश्यकता और अवधारणा को स्पष्ट करते हुए दलित आलोचक कँवल भारती का कहना है –''सवाल अनुभूतियों और चिन्तन का है। दलित जीवन की पीड़ा की जैसी अनुभूतियाँ सवर्ण को नहीं हो सकती।'' इसलिए पूर्व में हिन्दी साहित्य में दलितों को केन्द्र में रखकर जिस साहित्य की रचना की गई है, उसे दलित साहित्य की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता क्योंकि प्रश्न दलित चेतना का है, मानवीय दृष्टि या प्रगतिशील दृष्टि का नहीं।

दलित साहित्य का आधार डॉ. अम्बेडकर का दर्शन है। डॉ. अम्बेडकर के चिन्तन की स्थापना ही दलित साहित्य की मुख्य अवधारणा हैं, ''आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह अम्बेडकरवादी हैं। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उसके सरोकार वहीं है जो अम्बेडकर के थे, ''दलितों के प्रति सामाजिक अन्याय और आर्थिक शोषण–उत्पीड़न के विरुद्ध अम्बेडकर की विद्रोह चेतना ही दलित साहित्य की मुख्य शक्ति है।

हिन्दी में विगत दो–ढाई दशकों में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, आलोचना, पत्रकारिता आदि सभी विधाओं में प्रचुर दलित साहित्य लिखा गया है। जहाँ तक हिन्दी कथा साहित्य का प्रश्न है तो उसे दो भागों में विभक्त किया गया है।

पहला भाग हिन्दी कथा साहित्य में दलित विमर्श को लेकर है जिसके बारे में पहले संकेत किया जा चुका है और जिसे दलित साहित्य के अन्तर्गत नहीं माना जाता।

वस्तुतः हिन्दी में प्रेमचन्द के कथा साहित्य से दलितों के प्रति मानवीय दृष्टि की अभिव्यक्ति मिलने लगती है। प्रेमचन्द ने अपनी अनेक कहानियों और उपन्यासों में दलितों पर होने वाले अन्याय, शोषण और उत्पीड़न का चित्रण किया है। आजादी के बाद भैरव प्रसाद गुप्त, अमृतलालनागर और नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में जमींदारों द्वारा दलितों के आर्थिक और दैहिक शोषण का गहरी सहानुभूति और वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ अंकन किया है, नागार्जुन के 'बलचनमा' और 'वरूण के बेटे' उपन्यास इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं, निराला के उपन्यास 'चतुरी चमार' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

अमृतलाल नागर का उपन्यास ''नाच्यौ बहुत गोपाल'' दलित जीवन का महाकाव्य कहा जा सकता है। इसमें भंगी जीवन को नारकीय यथार्थ का बहुत सटीक और संवेदनापूर्ण चित्रण हुआ है, गिरीराज किशोर के उपन्यास 'यथा प्रस्तावित' और 'परिशिष्ट' में सामाजिक उत्पीड़न और क्रूरता के शिकार दलितों का चित्रण हुआ है, रमेशचन्द्र शाह के 'किस्सा गुलाम' में दलित जाति में जन्मे कुन्दन की कुंठा और विद्रोह की भावना का प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है।

जयप्रकाश कर्दम का उपन्यास 'छप्पर' दलित लेखक द्वारा दलित जीवन पर लिखा पहला उपन्यास कहा जाता है, जिसमें उन्होंने अपने जीवन में भोगे हुए अनुभव के आधार पर सवर्ण समाज द्वारा दलित समाज के उत्पीड़न तथा उसके विरुद्ध दलितों के सक्रिय विरोध का चित्रण किया है, इसके अतिरिक्त दलित लेखकों के उपन्यासों में 'जसतस भई सबेर' (सत्यप्रकाश) , 'थमेगा नहीं विद्रोह' (उमराव सिंह जाटव), 'छप्पर' और 'करुणा' (जयप्रकाश कर्दम), 'शपथ' (विपिन बिहारी), 'मुक्तिपर्व' (मोहनदास नैमिशराय) और 'भंवर' (कैलाशचन्द चौहान) आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

दलित विचारकों, चिंतकों और लेखकों को संबोधित करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा था– ''हमारे देश में उपेक्षितों और दलितों की बहुत बड़ी दुनिया है इसे भूलना नहीं चाहिए। उनके दुःखों को, उनकी व्यथाओं को पहचानना जरूरी है और अपने साहित्य के द्वारा उनके जीवन को उन्नत करने का प्रयास करना चाहिए। इसी में सच्ची मानवता है।''

डॉ. अम्बेडकर ने दलित चिंतकों, लेखकों को लेखकीय कर्त्तव्य के प्रति न केवल सचेत किया बल्कि शोषण मूलक संस्थाओं को समूल उखाड़ने का आहवान भी किया।

संघर्ष, विद्रोह और नकार ने सृजन की भूमि तैयार की और इस सृजित दलित साहित्य के दो लक्ष्य थे। दलित–वंचितों की व्यथा, पीड़ा, यातनाजनित अनुभवों की अभिव्यक्ति और सोपानीकृत समाज व्यवस्था को बदलने के लिए धर्मसंस्थाओं का विरोध तथा परंपराओं से विद्रोह। यह सामाजिक–साँस्कृतिक बदलाव के लिए चुनौती भरा आहवान था, जिसने थोड़े ही समय में आन्दोलन का रूप ले लिया था। सामाजिक न्याय के लिए दलित वर्ग को स्वयं ही यह निर्णय लेना था और चातुर्वर्ण्यव्यवस्था द्वारा निर्मित अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था और ब्राह्मणवादी मानसिकता को बदलना था।

वर्ण–जाति व्यवस्था की ही क्रूरता का परिणाम है कि तीन हजार से अधिक समय तक अछूत इस व्यवस्था में उत्पीड़न के शिकार हुए और बहिष्कृत बस्तियों में रहने की अपमानजनक त्रासदी को आज तक झेल रहें है।

दलित वर्ग के पास यातना और वेदना के अनुभवों का उफनता हुआ समुंदर है। जीवन के किनारे को छूती हुई पीड़ा की एक दर्दभरी कहानी है। इन विशिष्ट त्रासद अनुभवों की अभिव्यक्ति ने मानव जीवन के छिपे हुए सत्य को उजागर कर दिया। सृजन के क्षेत्र में पहली बार इस विशिष्ट अनुभव की अभिव्यक्ति से उजागर

हुए समाज व्यवस्था के इस सत्य को कोई नकार नहीं सका और न ही रोक सका। मराठी तथा अन्य भाषाओं में भी इस अनोखी अनुभूति की अभिव्यक्ति से लेखन का क्षेत्र चकित था। उन्हें दर्द का यह उफनता समुंदर कभी नज़र नहीं आया, यह उनकी संकुचित दृष्टि ही थी।

दलित उपन्यासों में आत्मसजग अभिव्यक्तियों में एक प्रखर स्वर सम्मिलित है, जो तिहरे शोषण के प्रतिरोध के लिए फूट पड़ा है। मनु द्वारा लादी गई उत्पीड़ित, अपमानित, शोषित जीवन की तलहटी से उठता यह तीव्र स्वर दलित चेतना को विकसित ही नहीं, अधिक तेजस्वी बना रहा है। जाति, लिंग और वर्ग आधारित तिहरे शोषण को झेलती—दलित स्त्री उन विषमतावादी नैतिक मूल्यों, पुरुषसत्ताओं की आधीनता की राजनीति को नकारती है। एक स्वतंत्रचेता मानवी के रूप में सामाजिक समता, आर्थिक समता और लिंग आधारित समता की हकदार वह इस सामाजिक यथार्थ को बदलना चाहती है।

दलित लेखन व्यापक परिवर्तनकारी उद्‌देश्यों को लेकर चल रहा है। दलित लेखन जहां एक ओर समाज में सकारात्मक परिवर्तन करके समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहता है वहीं वर्चस्ववादी उत्पीड़नकारी संस्कृति और मूल्य व्यवस्था को भी समाप्त करना चाहता है। यह एक ऐसे समाज की संकल्पना का पक्षधर है जिसमें कोई किसी का शोषण न करे। किसी विशेष जाति को ही 'योग्यता' का आधार न माना जाये। जाति, वर्ग, लिंग, रंग और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव न हो। इन्हीं सब उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु दलित साहित्य एवं लेखन निरंतर प्रयासरत हैं।

दलित उपन्यासों में ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों के साथ उनके मिथकों का प्रयोग युगीन सत्य की अभिव्यक्ति के लिए किया गया। शंबूक, एकलव्य, वाल्मीकि, व्यास, चार्वाक, कर्ण जैसे पात्रों की चारित्रिक विशेषता और क्रांति धर्मिता की युगीन संदर्भ में महत्त्वपूर्ण मानकर परंपरागत मूल्यों के विरोध के लिए उपयुक्त माना।

विषय का अनावरण

दलित उपन्यासकारों के साहित्य में दलितों के प्रति हुए शोषण का चित्रण, स्थानीय परिवेशगत शब्दावली और भाषा का प्रयोग व वातावरण को प्रस्तुत करने की क्षमता के कारण यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि इस शब्द का व्यापक विश्लेषण किया जाए। प्रतिरोधी शब्द का अर्थ नकार, विद्रोह, विरोध, आक्रोश, विक्षोभ, वेदना आदि हैं, किन्तु विधिगत रूप में 'प्रतिरोध' शब्द का प्रयोग अपने मूल रूप से होता है। वह मूल्य—चेतना भी 'प्रतिरोध' के अन्तर्गत आती हैं जो दलित साहित्य के विरोध में है या फिर दलित साहित्य द्वारा किसी मूल्य चेतना का विरोध किया जाता हैं।

दलित लोगों की प्रतिष्ठा में रोड़ा साबित होने वाले मूल्य चेतना का दलित साहित्यकारों ने प्रतिरोध करके दलित समाज को प्रतिष्ठित किया अर्थात् वह मूल्य चेतना की प्रतिरोध के अन्तर्गत आ जाते हैं जो दलित लोगों को प्रतिष्ठित करने में कारगर सिद्ध होते हैं और अपनी आवाज़ को उजागर करते है। दलित को स्थापित करने हेतु बनाये गये लोकतांत्रिक नियम भी प्रतिरोध कहलाते है अथवा दलित लोगों को समाज में सम्मानित करने हेतु तन्त्र भी प्रतिरोधी मूल्य ही होते है।

प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का विवरण

शोध प्रबंध–

1. जगदीशचन्द्र के उपन्यासों में दलित चेतना– सागर चन्द्र–2014–दिल्ली यूनिवर्सिटी
2. भूमण्डलीकरण भारत में हिन्दुत्व की अवधारणा और दलित अस्मिता–अभिमन्यु कुमार–2013 दिल्ली यूनिवर्सिटी
3. उत्तर प्रदेश विधानसभा में दलित विधाओं का अध्ययन 1997 से 2002– मीना– 2013–दिल्ली यूनिवर्सिटी
4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और दलित समाज : दलित केन्द्रित उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में– सुजीत कुमार– 2014– जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी
5. अधुनातन लेखकों के उपन्यास : नारी चेतना के विविध आयाम सन् 1975 से 1995 तक– रीता– 2014 जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी
6. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी और मराठी उपन्यासों में वर्गीय अभिजातीय संघर्ष– विमल –2014 जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी

समीक्षा–

1. मध्यप्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ का मुखपत्र–प्रो. कमला प्रसाद–वाणी प्रकाशन 58 जुलाई, सितम्बर 2005
2. भारतीय दलित साहित्य : स्वरूप एवं शोध की नई संभावनाएं – दिलीप कठेरिया, दलित अस्मिता, जनवरी–जुलाई 2014

पुस्तक समीक्षा–

1. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार–रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन।
2. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ– ओमप्रकाश वाल्मीकी, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2013

दलित उपन्यासकारों के दलित उपन्यासों के संबंध में विचार करना और उसमें भी उनके उपन्यासों में निहित प्रतिरोधी मूल्य चेतना को उजागर करना शोध का विषय है। डॉ. अम्बेडकर ने जिस दलित–चेतना की नींव डाली वह वैज्ञानिक सोच पर आधारित थी और धर्म, भाग्य, भगवान और सारी परंपरागत रूढ़ियों एवं विकृतियों से मुक्ति की राह खोजती थी। स्वाभिमान, अधिकार और आत्मसम्मान आदि का उद्‌घाटन करते है। इस प्रकार हम दलित उपन्यासों में प्रतिरोधी मूल्य चेतना पर विचार करते हैं जो मूल्यतः पात्रों की अभिव्यक्ति के और अनुभूति के सूक्ष्म आयामों को भी विश्लेषित करते हैं। वस्तुतः शोध के परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत विषय की विशिष्टता यही है कि हम इसके द्वारा उपन्यासकारों के बहुआयामी व्यक्तित्व और प्रभावशाली कृतित्व, दलित उपन्यास साहित्य 'जाति' व्यवस्था को नकारने वाले, शोषित मानव की की व्यथा

बताने वाला और कुचले लोगों की वाणी दलित साहित्य व विद्रोह संघर्षरत मानव की आम वेदना आदिका कारण सहित वर्णन एवं विश्लेषण करते है।

शोध की आवश्यकता का उद्देश्य

आधुनिक समय के विविध दलित उपन्यासकारों की अपनी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि, संयमित कला अनुशासन और आत्मीयता को रेखांकित करने में पूर्णतः सक्षम हों, उनके उपन्यासों का शोध के द्वारा विश्लेषित करना एवं उन पर विचार करना शोध कार्य की सार्थकता को सिद्ध करता है। दलित लेखक ऐसे उपन्यासकार ही हैं। दलित उपन्यासों के लेखन में सादगी और जीवन कटु सच को उजागर करने का प्रयास किया गया हैं जिसमें प्रतिरोधी मूल्य चेतना का रंग बहुत गहरा है जिसका विश्लेषण करना शोध की आवश्यकता है। प्रतिरोधी मूल्य चेतना में छिपी भावनाओं को उनके पीछे छिपे मर्म को पूर्ण गहराई के रूप में चित्रित किया गया है तथा तथ्य को दृष्टि में रखते हुए रूपरेखा के अनुसार विविध उपन्यासों में निहित प्रतिरोधी मूल्य चेतना को विश्लेषित किया जायेगा। उपन्यासकारों की भाषा, भावनाओं के विभिन्न स्तर आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण करते हुए राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का चित्रण किया जाएगा साथ ही भाषा की सशक्तता, सार्थकता एवं सम्प्रेषणीयता पर पूर्ण विचार करना महात्मा गाँधी, ज्योतिबा फुले, अम्बेडकर जैसे सुधारकों ने सामाजिक अव्यवस्था पर किया गया व्यंग्य, सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के विविध आयाम, दलितों की स्वानुभूति व सहनुभूति, दलित अस्मिताओं के प्रश्न व शिल्पगत विधान को प्रस्तुत करने का उद्‌देश्य रहेगा। समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा। न केवल पुस्तकें, पत्र, पत्रिकाएँ, संदर्भ ग्रन्थ आदि का अध्ययन किया जाएगा अपितु आधुनिक उपन्यासकारों के साथ साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध को सार्थक बनाने का प्रयास किया जाएगा।

हिन्दी दलित उपन्यासों में प्रतिरोधी मूल्यचेतना का अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय– **दलित साहित्य की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के विविध आयाम**

1. विषय प्रवेश
2. प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का विवरण , शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य
3. बौद्ध दर्शन (चार्वाक, मखली गोशाल, अश्वघोष) , एवं सिद्ध साहित्य
4. भक्ति आन्दोलन संत साहित्य महात्मा ज्योतिबा फुले, अम्बेडकर , बाबू मंगूराम, स्वामी अछूतानन्द, पेरियार
5. मराठी दलित साहित्य, प्रगतिशील साहित्य एवं अश्वेत साहित्य (परिचयात्मक विश्लेषण)

द्वितीय अध्याय– **प्रतिरोधी मूल्य चेतना का स्वरूप**

1. प्रतिरोधी मूल्य चेतना का स्वरूप
2. विचारधारा एवं प्रतिरोधी मूल्य चेतना
3. वर्ण–व्यवस्था और जाति व्यवस्था से निर्मित
4. सामंतवादी एवं पूँजीवादी वर्चस्व की प्रतिरोधी मूल्य चेतना एवं विचारधारा
5. अस्मितावादी प्रतिरोधी मूल्य चेतना

तृतीय अध्याय– **हिन्दी दलित साहित्य का प्रारंभ एवं पृष्ठभूमि**

1. हिन्दी दलित उपन्यास का उद्भव और विकास
2. हिन्दी के प्रमुख दलित उपन्यासकार

चतुर्थ अध्याय– **हिन्दी दलित उपन्यास और गैर–दलित उपन्यासों में जीवन मूल्य दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन**

1. दलित उपन्यासों की अन्तर्वस्तु और दलित जीवन
2. गैर दलित और दलित उपन्यासों में अन्तर
3. गैर दलित उपन्यासों में दलित जीवन दृष्टि (प्रेमचन्द , निराला , नागार्जुन, अमृतलाल नागर आदि ।)

पंचम अध्याय– **हिन्दी दलित उपन्यास में निहित प्रतिरोधी मूल्य चेतना**

1. समकालीन दलित जीवन की समस्याएँ और दलित उपन्यास
2. दलित उपन्यास ओर प्रतिरोधी मूल्य चेतना (स्त्री , दलित , मुसलमान , दलित इसाई आदि।)
3. दलित उपन्यासों के समकालीन प्रश्न

पष्ठ अध्याय– **हिन्दी दलित उपन्यासों की भाषा और शिल्पगत अध्ययन**

1. भाषा
2. दृश्य बिम्ब
3. सौन्दर्यात्मक मूल्य

उपसंहार –

परिशिष्ट–

साक्षात्कार
प्रश्नावली
आधार ग्रंथ
संदर्भ ग्रन्थ
कोश
विश्वकोश
पत्र–पत्रिकाएँ

अनुसंधित्सु
अनुराधा सिंह

पत्रिकाओं की सूची

1. विमल थोरात, दलित अस्मिता, एंड्रयूजगंज दिल्ली, त्रैमासिक पत्रिका
2. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह चंचल चौहान, नया पथ, नई दिल्ली, अर्द्धवार्षिक
3. हरिनारायण, कथादेश, दिल्ली मासिक, पत्रिका
4. रमणिका गुप्ता, युद्धरत आम आदमी, दिल्ली, त्रैमासिक पत्रिका
5. सुधीश पचौरी, वाक्, दिल्ली, त्रैमासिक पत्रिका
6. अखिलेश तद्भव लखनऊ अक्तूबर, 2012
7. ओम थानवी जनसत्ता, अखबार दैनिक समाचार पत्र, दिल्ली
8. विष्णु नागर, शुक्रवार, मासिक पत्रिका
9. मोहनदास नैमिशराय, बयान, दिल्ली

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

क्र० सं०	रचनाकार	रचना	प्रकाशन	संस्करण
1.	उमराव सिंह जाटव	थमेगा नहीं विद्रोह	वाणी प्रकाशन,दिल्ली	2008
2.	जयप्रकाश कर्दम	छप्पर,	राहुल प्रकाशन, दिल्ली	2012
3.	जयप्रकाश कर्दम	करुणा	कंचन प्रकाशन, दिल्ली	2007
4.	विपिन बिहारी	शपथ	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2010
5.	मोहनदास नैमिशराय	मुक्तिपर्व	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2013
6.	कैलाशचन्द चौहान	भंवर, सुबह के लिए	सम्यक् प्रकाशन, दिल्ली	2013
7.	मैत्रेयी पुष्पा	झूला नट	राजकमल प्रकाशन,इलाहाबाद	2012
8.	मैत्रेयी पुष्पा	अल्मा कबूतरी	राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद	2009
9.	रमणिका गुप्ता	सीता	अनुराग प्रकाशन	1996
10.	रमणिका गुप्ता	मौसी,	अनुराग प्रकाशन	1997
11.	बलचनमा	नागार्जुन	राजकमल कमल, दिल्ली	2007
12.	काला पहाड़	भगवानदास मोरवाल	राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली–2	1999
13.	जसतस भई सवेर	सत्य प्रकाश	कामना प्रकाशन, दिल्ली–93	1998
14.	पानी के प्राचीर	रामदरश मिश्र	हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी	1961

15.	जल टूटता हुआ	रामदरश मिश्र	हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी	1969
16.	नाच्यौ बहुत गोपाल	अमृतलाल नागर	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	चतुर्थ संस्करण 1982
17.	कब तक पुकारूँ	रांगेय राघव	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली–110001	प्रथम संस्करण 1946
18.	कगार की आग	हिमांशु जोशी	भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी	1978

सहायक ग्रन्थ सूची

क्र० सं०	रचनाकार	रचना	प्रकाशन	संस्करण
1.	रमणिका गुप्ता	दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार	समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली	सन् 2001
2.	श्यामाचरण दुबे	परम्परा इतिहासबोध और संस्कृति	राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली	सन् 2000
3.	विमल थोरात	भारतीय दलित साहित्य का विद्रोही	रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली	सन् 2008
4.	रमणिका गुप्ता	स्त्री विमर्श–कलम और कुदाल के बहाने	शिल्पायन प्रकाशन दिल्ली	सन् 2014
5.	निशिकान्त ठकार	छुआछूत–शरण कुमार लिबाले अनुवाद	वाणी प्रकाशन	सन् 2012
6.	शंभुनाथ	जतिवाद और रंगभेद	वाणी प्रकाशन	सन् 2010
7.	पूरनचन्द्र	अवधारणाओं का संकट	राजकमल प्रकाशन	सन् 2009
8.	इरफान हबीब अनुवाद व संपादन रमेशरावत	इतिहास और विचारधारा	ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली लक्ष्मीनगर	सन् 2005
9.	श्यामचरण दुबे	समय और संस्कृति	वाणी प्रकाशन	सन् 2000
10.	ओमप्रकाश वाल्मीकी	दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र	वाणी प्रकाशन	सन् 2010
11.	सूरज बड़त्या	दलित साहित्य पक्ष प्रतिपक्ष	फ्रेंडस फॉर डेवेलपमेन्ट दिल्ली	2007
12.	अभय कुमार दुबे	आधुनिकता के आयने में दलित	वाणी प्रकाशन	2009
13.	चमनलाल	जाति एवं रंगभेद	वाणी प्रकाशन	द्वितीय संस्करण 2009
14.	सदानन्द शाही	दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द	प्रेमचन्द साहित्य संस्थान	2009